RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 47 हल्द्वानी सम्वत् 2083 सोमवार 27 अप्रैल 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

भैंसकोट-बांसबगड़ परम्पराओं का जुट

श्रीमती लक्ष्मी टोलिया से बातचीज

भगवान सिंह टूरिस्ट वाहन, गैस एजेंसी वाहन के साथ यात्रा में रमे रहे लेकिन उनकी व्यवहारिकता ने सबको सहारा दिया

बर्फ में सनकर नंगे पैर कठिन यात्राओं में निकलने का साहस करने वाले हमेशा अपने आप से खुश रहे हैं

कार्यालय प्रतिनिधि

हमारी लोक परम्पराएं, ग्राम परम्पराएं अपने आप में 'जुट' होती हैं और उनकी पकड़ में रहने वाले परिवार उन्नति करते हैं। ऐसी ही जुट है भैंसकोट-बांसबगड़ की।

पिथौरागढ़ जिले में एक छोटा सा गाँव है बांसबगड़ और एक है भैंसकोट। मुनस्यारी-खाती रोड पर स्थित इन ग्रामों में स्थानीय परम्पराओं को निभाने के लिये जाति समूहों में टोलिया परिवार भी अग्रणीय रहा है। इन्हीं में हुए श्री भगवान सिंह टोलिया। नैनीताल में सबसे पहले टूरिस्ट वाहन ले जाने वाले टोलिया जी गैस सर्विस एजेंसी वाहन ले जाने वाले भी पहले चालक रहे हैं। हमेशा यात्राओं में रमे रहने वाले भगवान सिंह के साहस के पीछे बड़ी ताकत श्रीमती लक्ष्मी देवी टोलिया की रही है। इनका परिवार बाद में डीडीहाट आ चुका था। भगवान सिंह सिंह जी के बड़े भाई हुए त्रिलोक सिंह और छोटे भाई लक्ष्मण सिंह। इनकी आगे पीढ़ी में त्रिलोक सिंह के सुपुत्र प्रहलाद सिंह। भगवान सिंह के स्व.दर्शन सिंह (इनके पुत्र-पुत्री सौरभ टोलिया, कविता टोयिला) और सुपुत्री सीता देवी हुए। लक्ष्मण सिंह टोलिया के सुपुत्र सुदर्शन टोलिया व तीन पुत्रियां हैं।

श्रीमती लक्ष्मी टोलिया की पुत्री सीता जी का विवाह सुरिंग मर्तोलिया परिवार के श्री लक्ष्मण सिंह मर्तोलिया से हुआ। इनके सुपुत्र अंकित सिंह व हर्षित सिंह हैं। विशेष भेंट में लक्ष्मी टोलिया उस दौर में जाते हुए स्मरण करती हैं जब उनके परिवार के सयाने व्यापार में संलग्न थे। जोहार में हुई अत्यधिक बर्फबारी में इनके जेठ त्रिलोक सिंह जी को जान गंवानी पड़ी। तब पति श्री भगवान सिंह ने कारोबार को संभाला। देवर लक्ष्मण सिंह अपनी काबिलित से आईटीबीपी में लगे। व्यापार में घोड़ों के साथ यह लोग यात्राओं पर निकलते। बर्फ में सनकर नंगे पैर कठिन यात्राओं में निकलने का साहस करने वाले अपने आप से खुश रहे हैं। प्राकृतिक आपदाओं के बाद भी अपनी परम्पराओं को बनाए रखा। वह कहती हैं- आज बहुत साधन व सुविधाएं हैं लेकिन पहले यह सब इतना कठिन था कि जो दिख रहा है वह सोच नहीं सकते थे।' उस बीच भगवान सिंह टोलिया जो आर्मी में थे, बाद में वाहन चालक के रूप में नैनीताल में जुड़ गये। इन्हीं अवसरों पर इनकी सुपुत्री सीता देवी ने नैनीताल में पढ़ाई की और पीलीभीत से बीटीसी करने के बाद उनकी शिक्षा विभाग में नियुक्ति हो गई। सुरिंग के श्री तेजसिंह मर्तोलिया-पार्वती देवी के

शेष पृष्ठ 2 पर

उत्तराखण्ड का इतिहास

द्युतिवर्मन् से यशोवर्मन् तक (8वीं के पूर्वार्द्ध)

डॉ.पंकज उप्रेती

उत्तराखण्ड के इतिहास को लेकर जितना कार्य विद्वतजनों ने अपनी ओर से किया है, उसमें सबकुछ तो है। बस उसे इतिहास के सांचे में आने और लाने तक किसी सरकार या इसके संस्थानों ने रुचि नहीं ली। उल्टा पुरस्कारों की झड़ी में वह पीढ़ी इसमें उलझी है जो करती कम, दिखाती ज्यादा है। इतिहास टटोलने और उसके उन पन्नों को सामने लाने वालों में लोक जीवन के अनुभवी अन्वेषक डॉ. प्रयाग जोशी का नाम उल्लेखनीय है। लोक साहित्य एवं इतिहास के क्षेत्र में कार्य करने वाले डॉ. जोशी ने उत्तराखण्ड के इतिहास पर एक नई पोथी को गुंथा है। 'द्युतिवर्मन् से यशोवर्मन् तक' के इस इतिहास का समय 7वीं शती के पूर्वार्द्ध से 8वीं के पूर्वार्द्ध तक का है।

डॉ. जोशी अपनी इस कृति में संकेत पहचान के साथ एक सुर में पूरी बात कहते चले जाते हैं बल्कि उसे सिद्ध करते हैं। संकेत पहचान के लिये 1. संस्थान, सुविधा और सरकार के बिना, 2. सुधिष्ठिर सम्वत्, 3. वर्मन कौन?, 4. हर्षवर्द्धन के समय के शासक, 5. अतिक्रमणों का दौर, 6. यशोवर्मन, 7. लोकगाथा में यशावर्धन, 8. 725-775 के बीच की राजजात सहित राजा जसदल का रासा, हिन्दी रूपान्तरण इसमें दिया है।

असल में उत्तराखण्ड का ऐतिहासिक भूगोल नामक किताब के लेखक श्री ताराचन्द्र त्रिपाठी ने जिस तरह से यहाँ के स्थानों के नामों को उजागर किया है, उसमें पड़ताल करते हुए डॉ.जोशी ने इतिहास की उन लकीरों को पढ़ना शुरू किया जो उजागर नहीं हो रहा था। हमेशा पहाड़ के लोक और इसकी व्यवस्था की पड़ताल करने वाले जोशी जी ने अपने अध्ययन में हमेशा उन लोगों को भी श्रेय दिया है जो लोक के सच्चे लिखवाड़ हैं। जबकि वर्तमान में देखा जा रहा है कि लिखवाड़ की जगह खिलवाड़ करने वालों की तायदाद बढ़ रही है, पुरस्कारों की अन्धी दौड़ में शामिल ऐसे लेखक, साहित्यकार, इतिहासकार जिस प्रकार से धूल झौंक रहे हैं उसमें इतिहास-भूगोल पर भी सन्देह गहराने लगता है। जबकि राजा-रजवाड़ों के साथ भरी-पूरी व्यवस्था उत्तराखण्ड में रही है। वह कौन लोग थे, कहाँ से आए, कितने समय राज्य किया, किन लोगों का दरवार से ताल्लुक था और किस तरह की व्यवस्था पर उन्हें विकास था, किन-किन के बीच युद्ध हुआ। ऐसे सुराग ढूंढने के लिये बहुत ही गम्भीर अध्यय व खोज करनी होती है। प्रयाग जोशी जी की हमेशा से इस प्रकार की खोज में वह बताते हैं- बदरिकाश्रम को चढ़ाई गई जमीन के दस्तावेज 'कार्तिकेयपुर' नगर से जारी हुए हैं। वीरणेश्वर को चढ़ाई गई भूमि के अभिलेख 'ब्रह्मपुर' से। कार्तिकेयपुर से जारी हुए दस्तावेज सदियों से पाण्डुकेश्वर महादेव के मन्दिर में रखे हुए थे, इसलिए पाण्डु केश्वर-ताम्रपत्र भी कहे जाते रहे हैं। उनमें लिखे मजनूम को सन् 1932 में ऐटकिंशन ने अंग्रेजी में अनूदित करके सार्वजनिक किया था। उस पर उसने लोगों की राय मांगी, तत्पश्चात् गजेटियर में उन्हें प्रकाशित किया था। पेश्तर उसके पुरातत्व विभागों के अनेक जर्नलों में उनके पाठ छपते रहे हैं। वे ताम्रपत्र आजकल बद्रीनाथ के कार्यालय में रखे हुए हैं। 'बदरिकाश्रम' को 'सदावर्त' दान करने वाले ये राजा 'कत्यूरी' कहे जाते हैं जिनका मूल स्थान उत्तराखण्ड में ही है।

खोजबीन और अध्ययन के बाद प्रयाग जोशी जी युधिष्ठिर सम्वत् को मानक बनाकर इस पर्वत प्रदेश के इतिहास की पड़ताल की बात करते हैं। कहते हैं- हम वर्तमान समय में, देश में प्रचलित ई0सन् के मानक से दान दाताओं के समय की पटड़ी बिठाने की कोशिश करते हैं। ताम्रपत्रों को पढ़ने के अधिकारी 'प्राज्ञ के' पटरी न बिठा पाने का ठीकरा भी ताम्रपत्र में फोड़ देते है। लिख देते हैं यह जाली हैं तो अध्ययन के पौधे का मूलोच्छेद ही हो जाता है। तालेश्वर के ताम्रपत्र को पढ़ने वाले डॉ. गुप्ते ने शिवप्रयाद डबराल को यह लिखकर पल्ला झाड़ लिया कि लिपि के हिसाब से तो इनका समय 5वीं से 8वीं सदी के बीच बैठता है और ताम्रपत्र जाली है। वह जाली भी है तो भी उस जाल को काटने के लिये बौद्धिक जागर की अपेक्षा है। भूमि का कब्जा देने के लिए किसी जमीन का पट्टा किसी अन्य के नाम लिखा जाता है तो उसकी तारीख तीन सौ वर्ष के भीतर के किसी दिन की कैसे होगी? यदि दाता राजा के इतिहासिक तिथि का ठप्पा जाली है तो दानपत्र को पढ़ने के लिए अधिकृत प्राज्ञ की उस विषय की पढ़ाई-लिखाई और टेनिड0 पर भी सन्देह होने लगता है। ऐतिहासिक खेजबीन, टेनिड0 और पढ़ाई लिखाई की व्यवस्था के बिना ही यह काम कोई शोधार्थी बलबूते कर रहा हो तो कोई भी अधिकृत विशेषज्ञ वही लिखेगा जो डॉ. गुप्ते ने डॉ. शिवप्रसाद डबराल की प्रार्थना के प्रतिवेदन पर 57 वर्ष पहले लिखा था।

डॉ.जोशी लिखते हैं- वर्तमान समाज में, देशभर के किशोर उम्र के बच्चों के लिए बनाई जा रही नवाचारी पाठ्य पुस्तक

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

किसका भविष्य तैयार कर रहे हैं?

गुरु-शिष्य परम्परा में सीधी सी बात है कि गुरु का दर्जा माता-पिता की तरह श्रेष्ठ है और गुरु अपने शिष्य को सबसे योग्य बनाना चाहता है। पठन-पाठन की यह विधा और पवित्रता अब धरी रह गई है क्योंकि शिक्षा के नाम पर जिस प्रकार का रुखा-सूखा सरकारी व्यवस्था में है, उतना ही तीखापन निजी व्यवस्था में है। 'शिक्षा का मिशन' वाली बात इसलिये भी बेइमानी हो चुका है क्योंकि शिक्षक के रूप में ज्यादातर वह भीड़ आ चुकी है जो मौका मिलने पर शिक्षक के रूप में है। बेरोजगारी और सरकारी नौकरी का लोभ काफी संख्या पदों को घेरे बैठा है। इसके अलावा अथाह पैसे वाले शिक्षा व्यवस्था में आकर इसे उद्योग बना चुके हैं। ऐसे में किसका भविष्य तैयार किया जा रहा है। कहना आसान होता है कि बच्चों का भविष्य संवारा जा रहा है लेकिन सच्चाई यह है कि अपनी रोटी के जुगाड़ में विद्यार्थियों को गुरु-शिष्य परम्परा सा लाभ नहीं मिल पा रहा है। यदि कोई विद्यार्थी अपनी मेहनत से किसी स्तर पर योग्यता प्रदर्शित करता है तो उसका नाम लेकर स्कूल अपना प्रचार करने लगते हैं।

प्राइमरी से लेकर उच्चशिक्षा तक एक सा हाल हो चुका है। गिनती भर के प्राइवेट स्कूल और सरकारी विद्यालय हैं जिनमें बड़े दिलदार गुरुजन होंगे जो अपने विद्यार्थियों के लिये जी-जान से जुटे हैं। बात सरकारी सिस्टम की करें तो हाल इसलिए भी बुरा हो जाता है कि पठन-पाठन के अलावा अन्य कार्यों का भार शिक्षकों के पास होता है। सरकार तमाम तरह की स्कीमों और अभियानों में इनको जिम्मेदारी देता है, राजकीय कर्मचारी के लिये वह करना ही होता है। कालेजों में भी यह सब खूब होने लगा है। तमाम तरह के अभियानों की सूचना-समाचार नित्य दिखाई देते हैं परन्तु इनकी सच्चाई कुछ और ही है। जब कालेजों में छात्र-छात्राओं की संख्या ही शून्य होती जा रही है तो कौन से अभियान चल रहे हैं? क्या फोटो खिंचवाकर खानापूर्ति की जा रही है? नौकरी में समय से वेतन मिलत रहे बस इतना भर खास है। यह सब किसका भविष्य है। शिक्षक-कर्मचारियों का भला होना ही चाहिये लेकिन विद्यार्थियों को कैसे लाभ हो, इस बारे में गम्भीरता से कार्य जरूरी है।

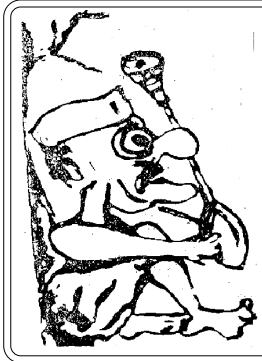

फसक

दाज्यू, दौरे से भी दबदबा होने वाला ठैरा

मनसुख-मुंहसुख के अलावा घुममुन का भी मजा आता है बल

दाज्यू, प्रधानमंत्री मोदी ज्यू का 28वां उत्तराखण्ड दौरा भी खूब रहा। सीएम पुष्कर धामी की अगुवाई में 18वीं बार उनका स्वागत किया गया। मोदी ज्यू ने भारत माता की जै के बाद बहुत ही प्यार से बोला- भै बैणियो, दिदी भुली बौणियो. .....। दाज्यू, दौरे से भी दबदबा होने वाला ठैरा। अपने बलपत दाज्यू भी जब कस्बे में आते हैं मोहल्ले वाले बड़ी उम्मीद से घेर लेते हैं। दाज्यू, देहरादून से दिल्ली का सफर चकाचक होना ही चाहिये। विपक्षी खामखां गरियाते रहते हैं। पार्टी के नेता महेन्द्र भट्ट कह रहे है।- 'प्रधानमंत्री के दौरे से भाजपा को टॉनिक मिला है।' दाज्यू, भट्ट ज्यू भी ठीक ही कह रहे हैं। टॉनिक किसको कितना मिल रहा है, हम तो घुममुन एक करके सोच-विचार ही कर सकते हैं और क्या करें? मनसुख-मुंहसुख के अलावा घुनमुन का भी मजा आता है बल। दाज्यू, आप भी घुममुन एक कर विचार करके देखो तो सही।

दो दिन पहले हम भी घुनमुन एक करके बैठे थे और मनसुख ले रहे थे तभी जसपुर में ठाकुर मन्दिर के पास रानी लक्ष्मीबाई व महाराज अग्रसेन की प्रतिमा लगाने को लेकर विधायक आदेश कुमार और पूर्व विधायक शैलेन्द्र मोहन सिंघल में ठन गई। मुंहसुख का मलाल भर रहा, बांकी मनसुख दोनों में दिखाई दिया। दोनों ओर से समर्थक भिड़ने लगे तो किसी प्रकार समझा कर शान्त करना पड़ा। दाज्यू, जिसको जिसकी मूर्ति लगवानी हो लगवाता रहे। हमें तो हवाओं से डर लगने लगा है। दुनियाभर में पता नहीं कितनी लग चुकी हैं और कितनी लगने वाली हैं।

पिथौरागढ़ के हुड़ेती प्राथमिक विद्यालय से चोर सिलेण्ड चुरा ले गये। वैसे ही गैस सिलेण्ड की लाइन लगी हुई है ऊपर से उचक्के हाबी। मिड डे मील का भात भी बनाना था, क्या करते। लकड़ी के चूल्हे फूंक-फूंक कर खाना पकाया बल। क्षेत्र में तीन महीने में चोरी की तीसरी घटना हो चुकी है। दूसरी ओर आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का आन्दोलन जारी है। इनकी सुध कोई तो लेता।

दाज्यू, नेपाल में सरकार बदलते ही नया दबदबा चल रहा है। अब भारत से खरीदे समान पर नेपाल ने सख्ती दिखा रहा है जिसमें सौ रुपये से अधिक का सामन खरीद पर नेपाल में भंसार (कस्टम शुल्क) लगा रहे हैं बल। नये नियमों से भारतीय बाजार असर होना ही है। दैनिक उपयोग की चीजों के लिये झूलाघाट, जौलजीवी, धारचूला, टनकपुर तमाम जगह नेपाली आने वाले हुए। रोटी-बेटी का रिश्तो जो ठैरा। ऐसे में घुममुन टेक के अलावा कर भी क्या सकते हैं। हल्द्वानी बनभूलपुरा दंगे के मुख्य आरोपी अब्दुल मलिक को हाईकोर्ट से सशर्त जमानत मिल चुकी है। मिर्जा मियाँ और रोहित सेठ ने पकौड़ी खाते हुए चारों ओर शान्ति की प्रार्थना की है। दाज्यू, दुनिया में अमन-चैन हो इससे बढ़कर और क्या होगा। हाय-हाय में क्यों घसीटा जाए किसी को। इसके लिये घुममुन सुख भी जरूरी है। -तुम्हारा भुली झकरुवा

डायनेस्टी मॉडर्न गुरुकुल एकेडमी, इण्टर कालेज

छिनकी फॉर्म, खटीमा (उधमसिंह नगर)

भैंसकोट-बांसबगड़..

प्रथम पृष्ठ का शेष

परिवार में इनका अंजल बना, जब इनका विवाह लक्ष्मण सिंह जी के साथ हुआ। लक्ष्मण सिंह मर्तोलिया जी 5 भाई-बहन हुए- लक्ष्मण सिंह, देवराज सिंह, पुष्पा देवी, मंजू और दमयन्ती।

शिक्षिका श्रीमती सीता मर्तोलिया अपने बचपन में लौटते हुए कहती हैं- 'पिता श्री भगवान सिंह माता श्रीमती लक्ष्मी टोलिया जितनी कर्मठता से अपने परम्परागत तौर-तरीकों को निभाते रहे हैं वही सब उन्हें ससुराल में देखने को मिला। उसका ही प्रतिफल है हम सबको मिल रहा है।' वह बताती हैं- 'पिता जी अपनी व्यवहारिकता के कारण बागेश्वर में 'बूबू' नाम से लोगों के प्रिय हैं। उनके सम्पर्क में रहे दानपुर क्षेत्र के लोग बेहद सम्मान करते हैं, जिसमें से कई लोग बिन्दुखत्ता में बस चुके हैं। टूरिस्ट गाड़ी के बागेश्वर में जाने से यात्रियों के अलावा स्थानीय लोगों से जिस प्रकार का वास्ता भगवान सिंह जी का रहा वह आज तक अटूट है। इस प्रकार भैंसकोट-बांसबगड़ फिर डीडीहाट से शुरू होकर इस व्यापारी परिवार ने अपने यात्रापथ पर बने रहने के अलावा अतिरिक्त श्रम करते हुए जो दूरी तय की उसका श्रमसाध्य हुआ है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

संगीत

पहाड़ की सुरसाम्राज्ञी बीना तिवारी

रतन सिंह किरमोलिया

कुमाउंनी गीत संगीत एवं गायकी की सुर साम्राज्ञी बीना तिवारी किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। वह कुमाउंनी और गढ़वाली गीतों की उस जमाने की गायक कलाकार रही हैं जब आकाशवाणी लखनऊ से इनकी शुरुआत हो ही रही थी। यह करीब सन् 1963 के शुरुआती दिनों की बात है। इससे पूर्व कुमाउंनी और गढ़वाली गीतों के प्रसारण की आकाशवाणी लखनऊ से कोई व्यवस्था नहीं थी। हाँ, स्थानीय मेलों एवं कौतिकों में लोकगीत गाए एवं बजाए जाते थे। हालांकि उस समय कुमाउंनी और गढ़वाली के कई गीतकार गीतों की रचना में लगे हुए थे। कुछ स्वयं गाते भी थे।

कुमाउंनी और गढ़वाली लोकगीतों के हिमायती कुछ प्रबुद्ध विद्वानों ने आकाशवाणी लखनऊ से 'उत्तरायण कार्यक्रम' नाम से इसकी शुरुआत की। इसकी जिम्मेदारी जयदेव शर्मा 'कमल' और जीतसिंह जड़धारी को सौपी गई। ये दोनों गढ़वाली में कार्यक्रम करते थे और कुछ कुमाउंनी के गीत बजाया करते थे। कुमाउंनी के लिए कम्पीयर के रूप में बंशीधर पाठक 'जिज्ञासु' को लाया गया। 7 जनवरी 1963 से वे उत्तरायण कार्यक्रम से जुड़ गए। तब कुमाउंनी गढ़वाली गीतों को गाने वाले गायक कलाकारों को खोजा जाने लगा। कुमाउंनी लोकगीत गाने के लिए बीना तिवारी का चयन किया गया। बाकायदा स्वर परीक्षा के बाद 'बी' हाईग्रेड कलाकार के रूप में उनका चयन किया गया। मैं समझता हूँ लोक भाषा कुमाउंनी के गीत गाने वाली तत्कालीन बी हाईग्रेड कलाकार के रूप में वह प्रथम महिला गायिका रही हैं। उन्होंने कुमाउंनी के साथ साथ गढ़वाली के भी कई लोकगीत गाए हैं। आकाशवाणी लखनऊ के उत्तरायण कार्यक्रम में उनके गाए गीतों के प्रसारण के बाद श्रोताओं से उन्हें जो प्यार और वाहवाही मिली वह काबिले तारीफ रही।

बीना तिवारी का जन्म पिता कृष्णचन्द्र और माता मोहिनी देवी के घर 14 जनवरी 1949 को लखनऊ में हुआ। उनका मूल पैतृक गाँव ज्योली (अल्मोड़ा) है। उनकी शिक्षा दीक्षा लखनऊ में ही हुई। उन्होंने बीए, संगीत निपुण तक की शिक्षा भातखण्डे संगीत महाविद्यालय लखनऊ से प्राप्त की। उनके संगीत एवं गायन में महारत हासिल करने में गोविन्द नारायण नातू और कृष्णराय की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। बाद में कुछ समय के लिए बेगम अख्तर और बिरजू महाराज के सानिध्य में रह कर भी उन्हें संगीत एवं गायन सीखने का अवसर मिला।

उन्होंने आकाशवाणी लखनऊ से जुड़कर कुमाउंनी गढ़वाली गीतों के अलावा हिन्दी के गीत गजल एवं भजन भी गाए। आकाशवाणी लखनऊ के अलावा आकाशवाणी रामपुर, नजीबाबाद और अल्मोड़ा केन्द्रों से भी उनके कार्यक्रमों का प्रसारण होता रहा है।

प्रतिष्ठित गीतकारों में चारुचन्द्र पाण्डेय, शेरसिंह बिष्ट 'अनपढ़', गोपालदत्त भट्ट, हीरासिंह राणा, बृजेन्द्र लाल साह, बंशीधर पाठक 'जिज्ञासु', चन्द्रसिंह राही, केशव अनुरागी, गिरीश तिवारी 'गिर्दा' आदि के गीतों का अपने सुरीले कण्ठ एवं मोहक स्वर में गाकर स्वयं भी लोकप्रियता हासिल की और गीतकारों को भी अमर कर दिया।

उस समय के इनके गाए गीत काफी चर्चित एवं लोकप्रिय रहे। उनमें जैसे- झन दिया बौज्यू छाना बिलौरी, ओ परुवा बौज्यू, दे देवा बाबा जी कन्या को दान, बाट लागी बर्यात चेली, पारा भीड़ा जाणियां बटौव रे, बुरूंशी का फूलों को कुमकुम मारो, गिरधारी तेरो अति चकान, लोरी गीत और रामी बौराणी जैसे अनेकों गीतों को आपने स्वर दिया। जो आज भी सराहे जाते हैं।

आकाशवाणी लखनऊ से प्रसारित कई धारावाहिकों में भी आपने काम किया। बर्ष 2022 की गणतंत्र दिवस की बीटिंग रिट्रीट परेड हेतु "झन दिया बौज्यू छाना बिलौरी.!' की धुन को चुना गया था। आपने 6 बर्षों तक मोतीलाल नेहरू कन्या इण्टर कालेज लखनऊ में और 19 बर्षों तक दयावती मोदी अकादमी रामपुर उ.प्र. में संगीत विषय का अध्यापन किया।

देश की नामी गिरामी कई संस्थाओं द्वारा समय-समय पर आपको करीब डेढ़ दर्जन पुरस्कारों/सम्मानों से नवाजा गया परन्तु आश्चर्य की बात है कि सरकारी स्तर पर अद्यतन आपको न संगीत नाटक अकादमी ने याद किया, न उत्तराखण्ड संस्कृति विभाग ने और न उत्तराखण्ड भाषा संस्थान ने ही आपकी कोई सुध ली। संगीत एवं गायन के क्षेत्र में इनके अमूल्य योगदान का कहीं कोई मूल्यांकन नहीं हो पाया। यहाँ तक कि वयोवृद्ध कलाकारों को मिलने वाली पेंशन से भी इन्हें महरूम रहना पड़ रहा है। उनका कहना है कि कई बार आवेदन करने के बावजूद किसी ने भी संज्ञान नहीं लिया। इस सम्बन्ध में उनका आगे कहना है कि वर्तमान में' अपनी-अपनी और अपनों की दौड़' में उम्र की इस दहलीज में किससे कहूं और क्या कहूं। अब तो मन खिन्न हो चुका है और अब तमन्ना भी नहीं रह गई है।

इस लेख के माध्यम से मेरा उत्तराखण्ड संस्कृति विभाग से अनुरोध है कि कम से कम उन्हें जीवन निर्वाह के लिए पेंशन तो अनुमन्य करवा देवें। उनके द्वारा लोकगीत संगीत क्षेत्र में दिए गए करीब 50 बर्षों के अमूल्य योगदान का मूल्यांकन का उत्तराखण्ड सरकार को संज्ञान लेना चाहिए।

ज्योतिष की बातें- 278

29 अप्रैल 2026 को स्थानभेद से बुध मीन राशि में पूर्व दिशा में अस्त हो जाएगा। बुध के अस्त होने का कोइ विशेष प्रभाव जातकों पर नहीं पड़ता है फिर भी बुध से प्राप्त होने वाले शुभाशुभ फलों में अगले 24 दिन न्यूनता अवश्य आएगी। 30 अप्रैल 2026 को बुध समराशि मेष में प्रवेश करेगा। किसी अन्य ग्रह की शुभाशुभ दृष्टि भी नहीं है। अत: बुध सामान्य फलदायी होगा। फलदीपिका के अनुसार बुध दूसरे, चौथे, छठवें, आठवें, दसवें और ग्यारहवें स्थान पर शुभ होता है अत: अगले 15 दिन बुध बुद्धि, वाणिज्य, व्यवसाय, साहित्य, लेखन आदि अपने कारक विषयों में मीन, मकर, वृश्चिक, कन्या, कर्क और मिथुन राशि के जातकों को शुभफल प्रदान करेगा।

नृसिंह चतुर्दशी- वैशाख शुक्लपक्ष चतुर्दशी सूर्यास्त कालीन तिथि के अनुसार बृहस्पतिवार 30 अप्रैल 2026 को भगवान विष्णु के चौथे अवतार भगवान नृलसह की जयन्ती उल्लास पूर्वक मनाई जाएगी।

कूर्म जयन्ती- वैशाख पूर्णिमा सायं व्यापिनी तिथि के अनुसार शुक्रवार 1 मई 2026 को भगवान विष्णु के दूसरे अवतार कूर्म भगवान की जयन्ती मनाई जाएगी।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 165

महंगी होती पढ़ाई

पहले तो मेडिकल, इंजीनियरिंग आदि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की फीस ही अधिक होती थी, उसके लिए लोग अपने बच्चों के लिए पैसे बचा कर रखते थे, लेकिन अब तो प्रारम्भ से ही अर्थात् नर्सरी की कक्षा से ही पढ़ाई बहुत महंगी हो गई है। आजकल औसत रूप से नर्सरी, केजी में ही फीस एक लाख रुपए प्रतिवर्ष के आसपास है। भारत में एक आम आदमी, अर्थात् नब्बे प्रतिशत भारतीयों, की औसत आय 18,000 रुपए प्रतिमाह है। ऐसी स्थिति में एक आम आदमी अपने दो बच्चों को कैसे पढ़ा पाएगा। आजकल औसत रूप से व्यक्ति को अपनी आय का 50 प्रतिशत अथवा उससे भी अधिक बच्चों की पढ़ाई पर खर्च करना पड़ रहा है। इसके बाद व्यावसायिक शिक्षा मेडिकल, इंजीनियरिंग, वकालत, मैनेजमेंट आदि का खर्च तो लाखों और करोड़ों में है। ऐसी स्थिति में एक औसत आदमी के लिए तो अपने बच्चों को उच्चशिक्षा दिलाना लगभग असम्भव हो चुका है।

फीस अत्यधिक होने के विभिन्न कारणों में एक यह भी कारण है कि आजकल कॉलेजों में बहुत अधिक सुविधाएं दी जा रही है जो कि अनावश्यक है। बहुत बड़ी-बड़ी बिल्डिंगें हैं। एसी रूम, विभिन्न प्रकार के खेल, कम्प्यूटर लैब और अन्य प्रकार की सारी सुविधाएं बच्चों को दी जा रही हैं। इसके बाद उच्चशिक्षा में बहुत बड़ी-बड़ी महंगी लैब होती हैं, जिसमें करोड़ों के इंस्ट्रूमेंट स्थापित किए जाते हैं। इस कारण भी शिक्षा अत्यधिक महंगी हो गई है। ऐसा वास्तव में नहीं होना चाहिए। न तो अत्यधिक अनावश्यक सुविधाएं होनी चाहिए और न ही लैब में करोड़ों के उपकरण।

उच्चशिक्षा में छात्रों को महंगे उपकरणों का प्रायोगिक प्रशिक्षण जॉब के दौरान ही इंडस्ट्रीज और अस्पतालों आदि में ही होना चाहिए। इतना करने मात्र से ही शिक्षा सस्ती हो सकती है ।

-ओंकार नाथ कोष्टा

बिखोती कर्ण महोत्सव अपनों के बीच आना सौभाग्य है : भरत सिंह

रुद्रप्रयाग। नगर पालिका के तत्वावधान में हुए बिखोती कर्ण महोत्सव के मुख्य अतिथि काबीना मंत्री जिला प्रभारी भरत सिंह चौधरी ने कहा कि यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे 25 वर्षों के बाद इस पीपल की छांव के नीचे बोलने का अवसर मिल रहा है। अपनी राजनीति की शुरुआत यहीं से हुई, 1988 में प्रधान बनने के बाद यहाँ से यूपी की राजनीति में भाग्य आजमाया लेकिन सफलता नहीं मिली लेकिन संघर्ष जारी रहा। आज मेरा सौभाग्य है मुझे अपनों के बीच में मंत्री एवं प्रभारी मंत्री के रूप में हूँ। उन्होंने सीएम की प्रशंसा करते हुए कहा कि धामी धांकड़ ही नहीं धुरन्धर हैं, जिनके प्रतिनिधि के रूप में मैं उपस्थित हूँ। उन्होंने पर्यटन विभाग की ओर से 3 लाख रुपये की घोष्णा की। पालिका चैयरमैन गणेश शाह, राज्यमंत्री रामचन्द्र गौड़, पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष ललित नैनवाल, पूर्व पालिकाध्यक्ष वृजेश बिष्ट सहित तमाम लोग थे। संचालन हर्षबर्द्धन थपलियाल ने किया।

पन्तनगर एयरपोर्ट का विस्तारीकरण जून तक होने की उम्मीद

पन्तनगर। मुख्य सचिव आनन्दबर्द्धन ने अपने भ्रमण के दौरान पन्तनगर एयरपोर्ट का निरीक्षण करते हुए इसके विस्तारीकरण प्रस्तावित कार्यों की समीक्षा की। इस दौरान डीजीएम सिविल अनूप गुप्ता ने बताया कि पन्तनगर हवाई अड्डा अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार बनाया जा रहा है। जिसे 380 करोड़ की लागत से होना है। जून माह तक कार्य पूर्ण कर लिया जायेगा। अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार तीन हजार मीटर का रनवे बनाया जायेगा।

समीक्षा बैठक में डीजीएम ने बताया कि पन्तनगर एयरपोर्ट विस्तारीकरण के लिये 524.70 एकड़ भूमि एयरपोर्ट प्राधिकरण के नाम आवंटित हो गयी है। साथ ही टीडीसी, पन्तनगर विश्वविद्यालय, सैनिक फार्म आदि की जो भी भूमि एयरपोर्ट को आवंटित की गयी है उसमें भवनों का ध्वस्तीकरण व पेड़ों का कटान कार्य कर दिया गया है। चाहरदीवारी निर्माण कार्य प्रगति पर है।

देवभूमि रजत जयन्ती पार्क

चम्पावत। आदर्श चम्पावत विजन के तहत विकसित हो रहे देवभूमि रजत जयन्ती पार्क बन रहा है। सीएम की घोषणा के तहत नगर पालिका परिषद की ओर से इस पार्क का निर्माण किया जा रहा है। नागनाथ वार्ड में बन रहे इस पार्क का डीएम ने स्थलीय निरीक्षण करते हुए कहा कि आधुनिक सुविधाओं और कुमाउंनी संस्कृति के समन्वय के साथ शहर का नया आकर्षण यह बनेगा। उन्होंने कुमाउंनी स्थापत्य शैली को प्राथमिकता की बात कही।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

गेहूं खरीद लिमिट पर किसानों में गुस्सा

बाजपुर। गेहूं खरीद केन्द्रों पर निर्धारित लिमिट बढ़ाने की मांग को लेकर किसानों ने प्रदर्शन किया। नाराज किसानों ने क्रय केन्द्र पर लगे बैनर फाड़ते हुए अधिकारियों ने तीखी झड़प की। एसएमआई नलिनी सिंह ने बताया कि रबी खरीद सत्र में विभाग की ओर से गेहूं खरीद के लिए केवल 300 क्विंटल की लिमिट निर्धारित की गई थी, जो अब पूरी हो चुकी है।

ढौरा के जंगल में आग पर काबू

अल्मोड़ा। गर्मी बढ़ने से वनाग्नि की घटनाओं के क्रम में ढौरा गाँव के जंगल में आग लग गई, जिसे सूचना पर फायर सर्विस टीम ने काबू कर लिया अन्यथा बड़ा नुकसान होता।

जूजित्सु में दीपांशु रौतेला का जलवा

रानीखेत। दक्षिण एशियाई जूजित्सु चैम्पियन शिप 2026 में रानीखेत के होनहार खिलाड़ी दीपांशु रौतेला ने शानदार प्रदर्शन कर भारत को कांस्य पदक दिलाया। साउथ एशियन जूजित्सु फेडरेशन के तत्वावधान में सात देशों की इस प्रतियोगिता में भारतीय टीम ने पहला स्थान प्राप्त किया।

परिक्रमा

फचैऽक

गणेश पाण्डे

काफल पाको मैंल न चाखो, एकबाल कफू चड़ रट लगूं
दूर परदेश में बसी लोगन कैं हिसा्व काफलूंकि नरै लगूं
हिसा्व काफलूंकि नरै लगूं साल में एक फ्यार आओ यार्हीं
गोल्ल गंगनाथ सैम ज्यूक थान लगैबेर भोग जाला तांही
पैदल न्हां रोड जा्ग जा्ग धेलि सौ रुपैं जेब में राखो
तुमन कैं धत्यूं कफू चड़ काफल पाको मैंल न चाखो।

चम्पावत में भी डाक वितरण पर खेल

चम्पावत। प्रदेश में काफी सुनने को आ रहा है कि संविदा में नियुक्त हरियाणा के डाकिया किस प्रकार की घपलत करते रहे हैं। चम्पावत जिला मुख्यालय से भी लापरवाही की सूचना है। बताया जाता है कि डाक वितरण के लिये महिलाएं भी नियुक्त हुई थीं। पहाड़ की शान्त वादियों में इन्हें जिस कार्य के लिये भेजा उसमें सालभर से घोर लापरवाही इनके द्वारा की गई है। प्रधान डाकघर में इस प्रकार की लिखित शिकायत के बाद सम्बन्धित डाकिया ने स्वीकारा और कहा कि भविष्य में गलती नहीं होगी। उल्लेखनीय है कि सीएम विधानसभा क्षेत्र के मुख्यालय में जब इस प्रकार से डाक वितरण में घोर लापरवाही हुई है तो अन्य जगह भी सोचनीय है। अधिकारियों ने भरोसा दिलाया है अब डाक व्यवस्था ठीक रहेगी।

लोहाघाट बाईपास में टनल बनेगी

लोहाघाट। जाम से जूझ रहे इलाके और घनत्व में घोर हो चुके शहर की आवश्कताओं को देखते हुए लोहाघाट में बाईपास जरूरी है। इसके लिये कवायद होने लगी है। बताया जा रहा है कि दो किमी लम्बी ट्विन टनल के अन्दर टू लेन में वाहनों की आवाजाही होगी। साढ़े 5 किमी लम्बी बाईपास प्रस्तावित है। इसके लिये कार्यदायी संस्था एनएच खण्ड ने निर्माण का प्रस्ताव राष्ट्रीय राजमार्ग मंत्रालय को भेजा है। इस बाईपास का शुरुआती बिन्दु देवराड़ी बैंड और अन्तिम बिन्दु राईकोट महर गांव है। मंत्रालय की टीम शीघ्र बाईपास के समरेखन के कार्य का निरीक्षण करेगी।

पिंडारी ग्लेशियर ट्रेक रूट पर चहलकदमी

बागेश्वर। दुनियाभर के पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र पिण्डारी ग्लेशियर ट्रेक रूट पर चहलकदमी होने लगी है जो 15 जून तक संचालित होता है। पर्यावरण संरक्षण का ध्यान रखते हुए क्षेत्र को प्लास्टिक और ठोस अपशिष्ट से मुक्त रखने के लिये इस बार पर्यटकों से सुरक्षा धनराशि भी जमा कराई जा रही है। प्लास्टिक सामान पर सौ रु.शुल्क भी।

सीमान्त के गांव बिजली से रोशन होंगे

मुनस्यारी। चीन सीमा से लगे मल्ला जोहार के 13 माइग्रेशन गांव जल्द ही बिजली से रोशन हांगे। विद्युतीकरण की मंजूरी मिलने के बाद इन गांवों तक लाइन बिछने का कार्य शुरू हुआ है। अभी तक सोलर लाइट से काम चलाया जा रहा था। मिलम, रिलकोट और बोग्डयार में सेना और आईटीबीपी की चौकियां स्थापित हैं, इन चौकियों में भी अब तक ग्रिड की बिजली नहीं पहुंच सकी थी। विद्युत लाइन बिछने से इन चौकियों को भी सुविधा होगी।

बटगल-सेलीपाख मार्ग सुधार की मांग

बेरीनाग। सेलीपाख के ग्रामणों ने बटगल सेलीपाख मोटर मार्ग सुधार की मांग को लेकर तहसील कार्यालय में प्रदर्शन किया। प्रधान गणेश सिंह के नेतृत्व में प्रदर्शन कारियों ने पीएमजीएसवाई और सरकार के खिलाफ नारेबाजी करते हुए डीएम को ज्ञापन भेजा। कहा कि खराब सड़क के कारण दुर्घटनाएं होती हैं। 20 दिन के अन्दर मार्ग सुधार न होने पर उग्र आन्दोलन की चेतावनी दी। प्रदर्शनकारियों में क्षेत्र पंचायत सदस्य पूजा राज, किरन देवी, दीवान सिंह भी मौजूद थे।

प्रथम जोहार शौका यूथ एण्ड बिजनेस कॉनक्लेव

जानकारों के अनुभव के बीच स्वरोजगार और स्टार्टअप करने वाले युवाओं के साथ सम्वाद

हल्द्वानी। जोहार शौका केन्द्रीय समिति द्वारा प्रथम बार शौका यूथ एण्ड बिजनेस कॉनक्लेव का आयोजन करते हुए युवाओं को जोड़ने का ठोस कार्य किया। समिति के अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह जंगपांगी सहित पूरी टीम ने जिस प्रकार से इस आयोजन को अंजाम दिया वह पहला अवसर था जब स्वरोजगार व अपने आप से किये जाने वाले कार्यों के बारे में विशेषज्ञों को सुनने का अवसर मिला और हर आयु वर्ग के लोगों की भागीदारी ने नये रास्ते खोले हैं। स्वरोजगार और स्टार्टअप करने वाले युवाओं के साथ सम्वाद से पहले परम्परागत रूप से आगन्तुकों का स्वागत और महिलाओं द्वारा कर्णप्रिय प्रस्तुति ने जिस प्रकार का रंग घोला उससे लगा कि भावर में 'शौका' से जुड़ा आयोजन हो रहा है। परम्परा में तो लघु व कुटीर उद्योग व व्यापार पहले से है ही लेकिन इसे वर्तमान हालातों में किस प्रकार किया जा सकता है, यही सब बताने के लिये अनुभवी लोगों और विषय विशेषज्ञों द्वारा बकायदा योजनाओं से अवगत कराने के साथ ही इसके व्यवहारिक पक्ष को रखा।

पूरे आयोजन में यह बात उभर कर आई कि मुनस्यारी जैसे स्थान में टूरिज्म ही रीड़ है तो युवाओं को किस प्रकार से इसके विविध आयामों को समझना चाहिए। आने वाले सैलानियों को किस प्रकार से जोड़ा जाए इस विषय को लेकर विशेषज्ञों ने मार्गदर्शन किया। बागवानी, डेयरी, होटल, होमस्टे, टूर एण्ड ट्रेवल्स, साहसिक खेल से लेकर बैंकिंग और फाइनेंस सेक्टर के विषय विशेषज्ञों ने युवाओं और बिजनेस पर केन्द्रित इस कॉन्क्लेव में गूढ़ बातें बताई। 'सहकार और स्वरोजगार' विषयक आयोजन को समय-समय पर मुनस्यारी में कराने की बात भी कही गई ताकि दूरस्थ क्षेत्र के लोगों को इसका लाभ हो और वह अपने कार्य में नये तरीकों को जोड़ लें। विशेषज्ञों में सुमि लखौटिया, डॉ. चलाल, डॉ. आर.एस.पतियाल, शिखा नेगी, अश्विनी मेहरा भी विशेष रूप से मौजूद थे।

कार्यक्रम में समिति के अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह जंगपांगी ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए आगे भी इस प्रकार के आयोजनों में जुड़ने का आह्वान किया जिससे समाज को सीधा लाभ हो सके। उन्होंने कहा कि जोहार के शौकाओं की समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा रही है। हरि प्रदर्शनी, जोहार क्लब का उल्लेख करने के साथ ही उन्होंने तिब्बत व्यापार की पुरानी परम्परा और उसके टूटने पश्चात आरक्षण के लाभ की चर्चा की। कहा कि अब समय है नौकरी का लोभ छोड़ अपने प्रयास करने होंगे, जो कि हमारी परम्परा में भी रहा है। युवाओं को स्वावलम्बी बनाने की दिशा में समिति ने नींव रख दी है, इसमें युवाओं ने उत्साह दिखाना चाहिये।

कार्यक्रम संचालन कैलाश सिंह धर्मशक्तू, नीरज पांगती द्वारा किया गया। इस अवसर पर पूर्व आईजी गणेश मर्तोलिया, प्रयाग सिंह रावत, देवेन्द्र सिंह धर्मशक्तू, मनोहर सिंह बृजवाल, श्रीराम सिंह धर्मशक्तू, गोविन्द सिंह जंगपांगी, हरीश धर्मशक्तू, भूपेन्द्र बृजवाल, एसएसएस बृजवाल, गंगा सिंह पांगती, डॉ. एन. एस.पांगती, भगत सिंह मर्तोलिया, भगवान सिंह बर्फाल, भूपेन्द्र सिंह जंगपांगी, सुन्दर सिंह मर्तोलिया, ईश्वर सिंह पांगती, भूपाल सिंह मर्तोलिया, वीरेन्द्र सिंह मपवाल, दीपक मर्तोलिया, धाम सिंह मर्तोलिया आदि थे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

द्युतिवर्मन से यशो....

प्रथम पृष्ठ का शेष

में उत्तराखण्ड जैसे तीथ-भूमि के अध्याय में उक्त दानपत्रों को जोड़ा जाना चाहिए। यह अपेक्षा पूर्णकाम तभी होगी जब उनमें दिए गए समय का निर्भ्रान्त निर्धारण होगा। बदरिकाश्रमीय शिक्षा-संस्कृति और उसके फलने-फूलने के लिए दान-वृत्ति के सरंजाम जुटाने वाले राजतन्त्रों के इतिहास की सिलसिलेवारिता को क्रमबद्ध करने के लिए, जहाँ तक मेरी जानकारी है, महाभारत को इतिहास की स्रोत सामग्री के लिए सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में आधार बनाना समीचीन ठहरता है। हमें उसके सम्वत्सरों को ही पंचाग मानक मानकर चलना चाहिए। तमाम अध्ययन के बाद वह कहते हैं- महाभारत में जिन कुणिन्दों का उल्लेख है, उन्हीं के वंशजों के उत्तरजीवी हैं कार्तिकेयपुर के राजा। पर्वताकार राज्य के निर्माता ब्रह्मान् भी उसी सदी के हैं। मालूम होता है वे उत्तरोत्तर आते हुए कई सदियों में यहाँ पहुँचे थे। इन्हीं पूर्वानुमानों में समाई हुई हैं अमोघमूति जैसे राजाओं की स्मृतियाँ जो महर, महरजस जैसे पदनामों से युक्त सिक्कों में उत्कीर्ण है। उन्हीं का सगोत्री शब्द है 'महतो', लोक भाषाओं में आज भी ग्राम्य श्रीमन्तों के सम्मान में व्यहृत होता है। जौनसार की खुमरियों में, हरयाणा की 'खाबों' में बैसवाड़ा की पंचायतों के निष्पक्ष नामी शयानों के लिए इस शब्द का प्रयोग करते लोगों को हमने देखा है। सम्भावना होती है ऐसे पदनामी अतीत में उत्तराखण्ड के पड़ोसी देस उत्तरकुरु या दक्षिण कुरु के शासक रहे होंगे। महाभारत की लड़ाई में ऐसे कितने ही महानामी शासक अपने पदोपजीवी जनों व जन-नायकों के साथ पाण्डवों के पक्ष में लड़ने के लिए शरीक हुए थे।

पाण्डुकेश्वर के ताम्रपत्रों में 18 प्रकार की पंचायतों में पीठासीन हैं, खश, किरात, द्रविड़, कलिंग, गौड़, हूंण, आन्ध्र, मैद से लेकर चाण्डाल पर्यन्त समस्त जनपदों के भाट, चट आदि सेवाकार-संवासी और अन्य भी जो हमारे पदोपजीवी ब्राह्मणों के अलावा हैं। किन्हीं को भी तिर्याया नहीं है पाण्डुकेश्वर के राजाओं ने। इसलिए उत्तराखण्ड के इतिहास के अध्ययन की स्रोत-सामग्री हैं ये सभी मानव-जातियां। इनके दिक्काल को सुधिष्ठिर सम्वत् के इधर या उधर ही निर्भ्रान्त रखा जा सकता है। 5 हजार दो सौ 36 वर्ष पूर्व की तिथि है यह। ईसा के वर्षों के मानक में यह तिथि तीन हजार दो सौ बयालिस ईपू बैठती है।

महाभारत संग्राम में भीमसेन का हिडिम्बा के गर्भ से उत्पन्न पुत्र घटोत्कच अपने दल-बल के साथ पाण्डवों की तरफ से लड़ने गया था वह युद्ध में शहीद हो गया। तब राजा युधिष्ठिर ने उसके पुत्र 'दानव'को कुर्मांचल का राजा घोषित किया था। उसके वंशज कुमाऊँ व पश्चिम नेपाल में 'दाणू' नाम से जाने जाते हैं। भीम के एक 'काली' नामक एक दानवी से भी सर्वगत पुत्र हुआ था। अर्जुन का इरावान पुत्र नागकन्या उलूपी से और बभ्रुवाहन मणिपुर के राजा की कन्या के गर्भ से पैदा हुआ था। बभ्रुवाहन को उसके नाना का पुत्र कहा गया है। उसकी पत्नी उत्तरा के गर्भ से परीक्षित के जन्म की कथा तो प्रसिद्ध ही है। युधिष्ठिर के पुत्र 'विन्धय' की सन्तानों को तो विन्धयशक्ति ही कहा जाता है। उनकी कौरवी नाम की पत्नी से देवक पैदा हुआ। इसके अलावा भी भीमसेन के श्रुतसेन, अर्जुन के श्रुतकीर्ति, नकुल के शतानीक व नरमित्र नाम के पुत्रों की सूची महाभारत में आती है।

दाणुओं की एक शाखा ने दानपुर में राजधानी बनाई थी तो दूसरी शाखा के मुखिया अशोकचल्ल ने नेपाल के दुलूदै लेख में। उसने अपनी महत्वाकांक्षा को दिग्विजय नाम देकर1191 ई. में उत्तराखण्ड भूमि पर धावा किया और गोपेश्वर के शिवालय में नागराजाओं द्वारा उत्कीर्ण विजय प्रशस्ति वाले त्रिशूल को उखाड़ा और उसके ऊपर अपनी विजय प्रशस्ति अंकित की थी। जिसमें उसने अपने को दानवभूतल का राजा कहा है। इतना ही नहीं 18 वर्ष बाद 1209 ई. में उसी के उत्तराधिकारी क्राचल्ल ने 'दानव' विरूद को त्याग कर 'देव' विरुद धारण किया और बाड़ाहाट (उत्तरकाशी) के शक्ति त्रिशूल पर उत्कीर्ण नागों के अभिलेख के साथ अपनी विजय का कारनामा जोड़ दिया था। वे दोनों 'दानवभूतल' के विजय दर्पी राजा जिन 10 माण्डलिकों को अपना करद् बनाकर दुलू-दैलेख को लौटते हैं उसमें 3 खश माण्डलिकों की उस सूची में हैं जो सीरा की बहियों में भी उल्लिखित हैं। इन्हीं माडलिकों के वंशधरों में बोहरा जैसे जातियां भी हैं जो समय बीतते-बीतते लोक भाषा के मुखागीर लाघव से बोहरा की जगह 'बोरा' बोली जाने लगी। शाकें 1306 में मेघवोरो की लड़की से राजा ज्ञानचन्द ने वैवाहिक सम्बन्ध बनाया था। राजदरबार में पहुँच हुई तो रुतवा हुआ। कुमाऊँ के इतिहास में चौधरी, तड़ागी, कार्की, बोहरों की चार-थान चौकड़ी ने चन्दों की सरकार का पारम्परिक ढांचा निर्मित करने में नींव का काम किया। नेपाल के एक अन्य राजा 'रणधीर' दानव से मल्लों की राजशाही भी शरू हुई थी।

इस भाँति छठी सदी के बाद से ही हिमालयी श्रृंखलाओं में बसी छोटी-छोटी पहाड़ियों और उनकी अधित्यकाओं में बसी किसानों, पशुपालकों, कन्द-मूल, फल-फूल, खनिज, शहद और वानस्पतिक उत्पदों से जीविका चलाने वाली जातियों पर शासन करने वाले वीरत्सिदी, लिच्चाऊ, ठाकुरी, तिरहुति आदि राजवंशों का अभ्युदय हुआ। मार्कण्डेय पुराण की जनपदों की सूचियों में हुंजा, उत्तरकुरू, तंगण, खश, कुन्त, प्रावरण, वार्द, हुहुक आदि जन जातियों के नाम आते हैं। ये पर्वताश्रयी आयुधजीवी लोग हैं। हंस मार्गों पर चलते हैं। कठोर परिश्रमी हैं। बहुत दिनों तक बिना खाये-पिये भी रह लेते हैं। मल्ल वंश का शासन स्थापित हो जाने पर तो वहाँ बड़ी बदलाव हुए। 1426-1476 तक राज करने वाले यक्ष मल्ल की गिनती नेपाल के सर्वश्रेष्ठ शासकों में है।

बम, वर्म, ब्रह्मा और ब्रह्मन वंश के राजे भारत के इतिहास में बहुत हुए हैं। वे ब्राह्मण वर्ग में भी हैं क्षत्रिय वर्ग में भी। डोटी में मल्ल, साही और बम एक ही कुल की अलग-अलग शाखाएं मानी जाती रहीं। उनकी एक शाखा ने डोटी के साथ सीरा अधिराज्य में भी राज किया था। सोर में क्रमबद्ध राजतन्त्र बमों ने ही 13वीं सदी में स्थापित किया था जिन्हें ताम्रपत्रों में बम और ब्रह्म दोनों लिखा गया है। सीरा में 1581 ई. तक मल्लों की राजशाही रही। सोर का विजय ब्रह्म और सीरा का आनन्दमल सम कालीन थे। सोर के बम राजाओं में प्रतापब्रह्म, शक्तिब्रह्म, वीरब्रह्म राजा हुए हैं। सोर की सीमा से लगे नेपाल के सुदूर पश्चिमांचल में स्थित पुरचूंणी आदि इलाकों में पुलस्त्य गोत्रीय ब्राह्मण बम राजा हुए हैं। कर्मकाण्डों में प्रयुक्त होने वाला 'वर्म' शब्द सभी क्षत्रियों के वर्ग की जातीयता को रेखांकित करने के लिए भी होता है।

जनजातीय समूहों के क्षात्र-बल, और सत्ता चलाने के कौशल अथवा रणनीति के प्रबन्धन के बिना, वर्णाश्रमीयता और अगणित नस्लों की प्रजाजनों के दशे में प्रशासन-शास्त्र की रूपरेखा तैयार करना भारत में कभी आसान नहीं रहा होगा। इस विकट 'साध' का व्यावहारिक सूत्र बाकाटकों, भारशिवों और नागों ने निकाला था। उन्होंने 'त्रैवर्णिक धर्म निर्णयों' के बीज वैदिक श्राद्धकल्पों में ढूंढे जिनमें कहा गया है 'कौम में एक भी स्मृति-शेष ऐसा नहीं रहना चाहिए जिसके बारे में सुनने को मिले कि उसे जलांजलि देने वाला कोई नहीं था। उन्होंने शर्म, वर्म और गुप्त नाम के तीन गोत्रों में देश की समस्त जातियों का समाहार किया था।

अध्ययनों से यह भी मालूम होता है कि राजा शब्द को कहने भर की संज्ञा होती थी। एक राजपद पदानुक्रम से उपराजा, अधिराजा, रियासतों का राजा होता था। एक राजा करद सामन्त होता था। एक की राजशाही समाप्तात् होती थी मित्र राज्य में।

इस प्रकार से लेखक ने 'उत्तराखण्ड का इतिहास' में जिन सूत्रों को जोड़ते हुए सिद्ध किया है वह इतिहास के शोध कर्ताओं के लिये बड़ा रास्ता है। इस रास्ते में बहुत बीहड़ अभी भी हैं जिसकी तलाश होनी ही चाहिये ताकि मानव जीवन के कई कर्म-मर्म हमें समझ दें।

घमासान अभी से होने लगी

लालकुआ सीट पर दावेदारी

2027 के विधानसभा चुनाव का गणित बनाने के लिये नेतागण एक्टिव मोड पर हैं। हल्द्वानी से लगी लालकुआ सीट पर दावेदारी के लिये कांग्रेस-भाजपा में लाइन लग चुकी है। इस सीट पर पहले कांग्रेस के हरीश दुर्गापाल विधायक रहे हैं तो वर्तमान में भाजपा के मोहन बिष्ट हैं।

इन दोनों नेताओं की बात अपनी अपनी पार्टियों में ठीकठाक है लेकिन जिस प्रकार से अन्य दावेदारी सामने हैं उसमें अन्तिम समय में कौन प्रत्याशी होंगे विचार होने लगा है। भाजपा से युवा नेताओं के चर्चे के साथ ही कांग्रेस से भी युवा नेताओं की दौड़ है। कुल मिलाकर हल्द्वानी सीट पर नाम तय करते समय पार्टियां लालकुआ सीट पर निर्णय लेंगी।

कालाढूंगी में होंगे नए चेहरे

हल्द्वानी से लगी कालाढूंगी सीट पर दांव लगाने के लिये नेताओं की लम्बी सूची है और बहुत उछलकूद मचने लगी है। भाजपा लगातार बंशीधर भगत को लेकर दांव चलती रही है और यह भगत जी के भाग्य का खेल भी है कि कांग्रेस में बबाल मचता रहा लेकिन 2027 का चुनाव बहुत रोचक होने जा रहा है। पार्टी पर किसी युवा को टिकट का दबाव दिखाई दे रहा है जबकि भगत अपने सुपुत्र विकास भगत के लिये यह चाह रखते हैं। हिन्दूबादी नेता विपिन पाण्डे और अन्य अपनी तैयारी में हैं। कांग्रेस की ओर से पूर्व ब्लाक प्रमुख भोलादत्त भट्ट पहले से इस लाइन में हैं लेकिन नीरज तिवारी जिस प्रकार से तैयारी में जुट चुके हैं उससे साफ होने लगा है कि कांग्रेसी मिलकर रणनीति बनाने जा रहे हैं।

द्वाराहाट में सवाल-जवाब शुरू

द्वाराहाट विधानसभा सीट पर इस बार घनघोर होने जा रहा है। कांग्रेस, भाजपा के अलावा यूकेडी की ताकत रखने वाले इस क्षेत्र में तय है कि कांटेदार टक्कर होगी और जिस तरह से कांग्रेस और यूकेडी तेवर दिखा रहे हैं उससे साफ है कि त्रिकोणीय मुकाबले की तैयारी होने लगी है। विपक्षी एकता की सारी बातें द्वाराहाट में नहीं चलेंगी क्योंकि यूकेडी के साथ खास ताकत दिखाई दे रही है। यही कारण है- चौखुटिया, गनाई, द्वाराहाट में सवाल-जवाब का खुला दौर चल रहा है।

जागेश्वर सीट पर मचलते नेता

जागेश्वर विधानसभा सीट के लिये नेता मचलने लगे हैं। हमेशा नाटकीय मोड़ लेने वाली इस सीट पर कांग्रेस, भाजपा, यूकेडी की ओर से जोरआजमाइश होती रही है। गोविन्द सिंह कुन्जवाल इस सीट पर बीजेपी नेताओं को चुनौती दे चुके हैं कि वह विकास कार्य 15 प्रतिशत भी दिखा देंगे तो राजनीति छोड़ दूंगा। कुन्जवाल का की चुनौती के बाद से चुनाव के लिये अपना रास्ता बना रहे नेता भी मौका बना रहे हैं और देश-प्रदेश में डबल इन्जन सरकार की बात करने लगे हैं। चुनाव से पहले मुख्य कस्बे दन्या में सिमटी राजनीति अनुमान लगाने लगी है कि होने वाले चुनाव में जनता क्या फैसला लेगी क्योंकि धड़ों में बंटे नेता और गफलत ज्यादा है।

काशीपुर में होने लगा है हंगामा

काशीपुर सीट के लिये कांग्रेस और भाजपा दोनों ओर से युवा जोश दिखाई दे रहा है। नये-पुराने नेता मिलकर अपनी ताकत बढ़ाते दिख रहे हैं और एक-दूसरे को घेरने के पीछे सबका इरादा 2027 दिखाई दे रहा है। पालिका चुनाव के समय से ही साफ दिखने लगा था कि विधानसभा चुनाव जब भी होंगे इसमें नये चेहरों का जोश और पुराने नेताओं के दांवपेच होंगे। काशीपुर सीट पर भाजपा और कांग्रेस दोनों ओर से टिकट के लिये दावेदारी होने लगी है और आये दिन बैठकों का दौर है।

राजनीति खेल में व्यस्त हैं पूर्व मंत्री व विधायक अरविन्द पाण्डे

तराई में दबदबा रखने वाले पूर्व मंत्री और बाजपुर विधायक अरविन्द पाण्डे राजनीति खेल में पूरी तरह व्यस्त हैं। उनके बयान और कार्य हैरान करने वाले दिखाई दे रहे हैं। क्योंकि कभी वह कांग्रेस का पक्ष ले रहे हैं तो कभी भाजपा का। यानी वह आने वाले विधान सभा चुनाव के लिये किसी भी तरह टिकट की जुगाड़ में हैं। भाजपा के भीतर उनको लेकर खटास बनी हुई है और उसके क्षेत्र से ही नेता दम ठोक रहे हैं। वियायक पाण्डे ने भी सीएम को निशाने पर लेकर खूब बयानबाजियां की हैं और कांग्रेस विधायक तिलकराज बेहड़ के साथ बैठक भी की। इस बीच अपने दौरे में वह कांग्रेस को भी कोसने लगे। दिनेशपुर दौरे में उन्होंने कहा- कांग्रेस हमेशा से बंगाली समाज की विरोधी रही है। कुल मिलाकर विधायक पाण्डे का जोर है भाजपा उन्हें मान दे और यदि किनारे किया गया तो वह अन्य रास्ते देखेंगे।

HIMALAYAN MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav, Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सतगढ़ में जसुली बूढ़ी लला सोक्यानी धर्मशाला जीर्णोद्धार एवं प्रबन्धन समिति का वार्षिकोत्सव

धरोहरों को बचाना पुनीत कार्य : कन्याल

पिथौरागढ़। दानवीरांगना लला जसुली बूढ़ी का स्मरण करते हुए इस बार कनालीछीना ब्लाक के तरगढ़ में भव्य आयोजन किया गया। सतगढ़ स्थित धर्मशाला में जसुली बूढ़ी लला सोक्यानी धर्मशाला जीर्णोद्धार एवं प्रबन्धन समिति का द्वितीय वार्षिकोत्सव के रूप में हुए इस आयोजन ने पूरे इलाके को नई स्फूर्ति दी है और संकल्प दोहराया है कि हमें अपनी धरोहरों की सुरक्षा करनी चाहिये, यही हमारे इतिहास हैं। इस दो दिवसयी आयोजन की शुरुआत पहले दिन सायंकाल 'तंब्वल पूजा-पाठ' के साथ हुई, जिसमें अपने पूर्वजों को याद किया गया।

वार्षिकोत्सव समारोह का उद्घाटन ब्लाक प्रमुख व पर्यटन अधिकारी व गणमान्य जनों द्वारा किया गया। पर्यटन अधिकारी कीति आर्या ने समिति के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि जसुली अमा की धरोहरों को बचाने के लिये शासन-प्रशासन भी संकल्पित है। दांतू स्थित लला की मूर्ति नये रूप में दिखाई देगी इसके लिये कार्य हो रहा है। कहा कि बेरीनाग स्थित धर्मशाला का आंगणन कर शासन को भेजा जाएगा ताकि उसका बेहतरीन सौर्न्यकरण हो। उन्होंने सभी से इन पावन धरोहरों को बचाने की अपील की। ब्लाक प्रमुख महिमन सिंह कन्याल ने अपने बचपन की स्मृतियों को धारचूला के साथ जोड़ते हुए कहा वह रं समाज से पूरी तरह परिचित हैं। लला जसुली के महान कार्यों को उनके बंशज व सामाजिक लोग सहेजना चाहते हैं, इसके लिये जितना हो सकेगा वह अग्रणीय रहेंगे। कहा कि इसे धार्मिक पर्यटन के रूप में बढ़ावा देने के अलावा समूह की महिलाओं को आगे आना होगा अर्थात हमारे कुटीर उद्योगों के सामान, परम्परागत व्यंजनों के स्टाल इत्यादि ऐसी जगहों पर लगाये जाने चाहिये ताकि पर्यटकों को इस दिशा में जोड़ा जाएगा। संचालन करन सिंह थापा द्वारा किया गया।

बेरीनाग धर्मशाला का आंगणन करके भेजा जाएगा : पर्यटन अधिकारी

इसे धार्मिक पर्यटन के रूप में बढ़ावा देने के अलावा समूह की महिलाओं को आगे आना होगा : ब्लाक प्रमुख

इस अवसर पर समिति द्वारा गंगा सिंह पांगती, डॉ. पंकज उप्रेती, डॉ. ललित जोशी 'योगी', अशोक सिंह गर्ब्याल, लक्ष्मण सिंह डांगी सूबेदार मेजर, देव सिंह पंचपाल, नरेन्द्र सिंह दताल, सुन्दर सिंह लटवाल, श्रीमती पुष्पा ग्वाल दुग्ताल, स्व. रघुवीर सिंह रौंकली को सम्मानित किया गया। समिति के अध्यक्ष फली सिंह दताल ने धरोहरों को उत्तराखण्ड की ऐतिहासिक यादें बताते हुए सभी से इसमें जुड़ने का आह्वान किया। मंगल सिंह कुटियाल व राम सिंह सोनाल ने आयोजन के लिये समिति को बधाई देते हुए सतगढ़ वासियों को अपने क्षेत्र की धर्मशाला संवारने के लिये प्रसन्नता जताई। इस अवसर पर मान सिंह गर्ब्याल, सोनू दताल, चन्द्र सिंह गर्ब्याल, हेम सिंह गुंज्याल, नीरज सहिं ह्यांकी, विमला दताल, लक्ष्मी गर्ब्याल, जानकी गर्ब्याल, अनुराग सिंह नबियाल, सुलेखा सोनाल नबियाल, सरोज नबियाल, देवांग सिंह, जिनिशा नबियाल, गोदावरी कापड़ी, लीलावती, निशा कापड़ी, भास्कर दत्त कापड़ी, रमेश चन्द्र कापड़ी, भूपेन्द्र कापड़ी, भुवन चन्द्र, शिवदत्त कापड़ी, प्रकाश कापड़ी, विनोद कापड़ी, संजय सिंह दताल, प्रदीप सिंह ह्यांकी, गुंजन कापड़ी, रासी कापड़ी, धीरज उप्रेती, कौशल जोशी, शुभम पाण्डे सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।

इससे पूर्व समिति की वार्षिक बैठक में संस्था के कार्यों, इसके रख-रखाव, इसके उद्देश्यों, आय-व्यय व भविष्य की योजनाओं को लेकर विस्तार से चर्चा हुई।

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे
धरमघर/चौकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148 www.mountainheights.in

न तेरा न मेरा Thats मो. 9458920379
APNA GHAR 6396098804
चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया
YOGA MEDITATION HOMELY FOOD LIVE MUSIC BIRTHDAY WEDDING

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236 मो.- 8958525979, 9411134775

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट
नरेन्द्र सिंह रावत
सम्पर्क 7351285555

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)